International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1129-1130

कमलसूनृत वाजपेयी के काव्य में पर्वों का महत्त्व

उपासना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

21वीं सदी की महान लेखिकाओं में कमल सूनृत वाजपेयी का मूर्धन्य स्थान माना जाता है। कमल सूनृत वाजपेयी कवयित्री, लघुकथाकार, यात्रा वृतांत आदि की रचना करने वाली साहित्यकार है। इनका जन्म 10 फरवरी सन् 1947 ई॰ को यवतभाल (महाराष्ट्र) में पं॰ अंबिका प्रसाद जी व कमला देवी त्रिवेदी के गर्भ से हुआ। सन् 1969 ई॰ में इनका विवाह महान आलोचक, निबंधकार, पत्रकार आचार्य नंददुलारे के पुत्र डॉ॰ सूनृत कुमार वाजपेयी के साथ हुआ।

त्यौहार दो प्रकार के होते हैं धार्मिक त्यौहार और राष्ट्रीय त्यौहार। धार्मिक त्यौहार में श्रीगणेश चतुर्थी, राम नवमी, होली, मकर संक्रान्ति, दीपावली, दशहरा आदि को स्थान दिया जाता है। राष्ट्रीय त्यौहारों में पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय नेताओं की जन्म जयंतियां, शिक्षक दिवस आदि को स्थान दिया जाता है। इन त्यौहारों और उत्सवों का आयोजन युगों से होता चला आया है। कभी–कभी विशेष ऋतुओं के स्वागत में भी उत्सव मनाये जाते हैं। त्यौहारों का मूल धर्म में देखा जाता है और उत्सवों का मूल लोक–समाज में पाया जाता है। हमारे धर्म का सार तत्त्व त्योहारों में ही देखा जाता है। जनता के हृदय में और समाज के व्यवहार में धर्म त्योहार के रूप में जीता है। उत्सव, मेले, रथयात्रा, यज्ञ और व्रत आदि में ही धार्मिक जीवन विकसित हुआ है। त्योहार के दिन सभी के मन की कसक और कुढ़न भूलकर भक्ति और आनंद में सम्मिलित भावों से उल्लासित होते हैं। उत्सव और त्योहार भारतीय संस्कृति के मस्तक की बिन्दी है।

व्रत, त्योहार और उत्सव हिन्दुओं के धार्मिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। त्योहार पूरे वर्ष के अलग–अलग महीनों में मनाया जाते हैं। हिन्दुओं के अधिकतर त्योहार हिन्दू माह और तिथि के अनुसार आते हैं। कई त्योहारों का नामकरण तिथि के आधार पर ही देखा जाता है। जैसे गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, रामनवमी आदि।

कवयित्री कमल सूनृत वाजपेयी के काव्य में पर्वों का सुंदर वर्णन उपलब्ध है। जिसमें दीपावली, होली, बसंत ऋतु, मकर संक्रांति आदि उल्लेखनीय है।

माघ शुक्ल पंचमी से बसंत ऋतु का प्रारंभ होता है। यह दिन शुभ कार्यों के लिए अच्छा माना जाता है। इसे वसंत पंचमी कहते हैं। माघ शुक्ल पंचमी से वसंतोत्सव का प्रारंभ होता है। जो फाल्गुन कृष्ण पंचमी को पूर्ण होता है। इस अवसर पर नर–नारी सुंदर वस्त्रों में सुशोभित होकर नृत्य गीत गाते बसंत ऋतु का स्वागत करते हैं। कवयित्री कमल सुनृत वाजपेयी ने अपने काव्य में बसंत ऋतु एवं वसंतोत्सव का वर्णन कई जगह प्रस्तुत किया है। बसंत तो ऋतुओं का राजा कहलाती है। जिसका प्रभाव सभी कवियों पर रहा हैं जो इस प्रकार है –

आज की सुबह आज की रात।
नैनों में भरा सुबह का भोर।
है बसंत का शुभ आगमन रे।
आज है पुलकित तन–मन रे।
आज की सुबह आज की रात।
ले आगे बासती लहंगा चुनर रे।
डाली–डाली अंबुआ बोरे,
कोयलिका कुहँकी डाली–डाली रे।
पीली–पीली सरसों रंग रंगीले रे।
आई–आई बसंत बहार रे
आज की सुबह।
आज की सुबह आज की रात।"[1]

कवयित्री कमल सुनृत वाजपेयी ने बसंत का वर्णन अपने हृदय की गहराई से किया है। वह बसंत में शीत लहर, रंगों, मन का मयूर नाचना आदि का वर्णन करती है।

"मदमस्त बसंत की शीत लहर में।
हम सब मिल गाना गाये एक स्वर में।
बसंत ऋतु ने धरा का घूंघट खोला।
लजीली धरा पर मानो प्यार उड़ेला।
मदमस्त बसंत की शीत लहर में।
धरती ने हरा बिछैला ओढ़ा है।
अगुआ की डालियाँ महकी है।
महुआ के रस बरसाया है।।[2]

बसंत में लहरों के साथ–साथ गेहूँ की फसल का भी बहुत ही सुंदर ढंग से कवयित्री ने वर्णन किया है। वन, तालाब, नदी, नाले, झरने आकाश आदि का वर्णन बहुत संयोग पक्ष को लेकर किया है।

मदमस्त बसंत की शीत लहर में।
लहराती बसंत की शील लहर में।
हम जाने बसन्त ऋतु आई है।
मन–मयूर नाच उठा है।
गूंज रही बसंत घर–घर शहनाई है।
मदमस्त बसंत की शीत लहर में।।"[3]

भारतीय समाज में वसंतोत्सव की तरह शरदोत्सव का भी काफी महत्त्व रहा है। यह भी बसंत ऋतु का ही हिस्सा माना जाता है। इसमें, कवयित्री ने बसंत ऋतु का वर्णन किया है –

नाचत गरजत बरसत बसंत आयो रे।
हाथों में मेंहदी माड़ी रे।
पाव में मेहंदी माड़ी रे।
संतरंगी साड़ी लाये संजनारे।

सतरंगी साड़ी पहनी सजना तोरी अगना रे।।"[4]

हिन्दू त्यौहारों में दीपावली अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और सारे भारत में हिन्दू लोग इसे बड़े उत्साह से मनाते हैं। यह त्यौहार दो दिन मनाया जाता है। आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और अमावस्या के दिनों यह त्यौहार बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। अमावस्या को नरकासुर के वध से उत्साहित जनता ने दीपमालाओं से सब रात्रि को दीप्तिमान किया था। इसी दिन वामन भगवान ने बलि राजा के कारागार से लक्ष्मी और अन्य देवों को मुक्ति दिलाई थी। लंकापति रावण को मार कर रामचन्द्र की सीता सहित इसी दिन अयोध्या पधारे थे। कवयित्री ने दीपावली के मंगलमय गान की स्तुति की –

दीपावली मंगलमय हो
दीपावली का त्यौहार आग है।
दीपों को प्रज्ज्वलित करते हैं।
दीपों से जगमग होता घर का कोना–कोना
घर आँगन में लगता है सोना ही सोना।
दीपावली के गणेश लक्ष्मी पूजन में श्रद्धा है
हाथ जोड़ शीश झुका करते उन्हें प्रणाम है।
माता–पिता मिल करते पूजा की तैयारी है।
दीपावली मंगलमय हो "[5]

प्रोफेसर मोहिनी टाया के अनुसार, "दीपावली एक ऐसा त्योहार है जिससे शरीर के हर एक अंग को आनंद मिलता है। जैसे आंखों को रोशनी का आनंद, जिह्वा को मिष्ठान्न का आनंद, देह को नये कपड़ों का आनंद, मन को देव दर्शन का आनंद, हाथ को भेंट सौगात का आनंद, दिल को प्रियजनों के मिलन का आनंद और आत्मा को दीपावली का अनोखा, अद्‌भुत और सर्व आनंदों में प्रमुख रूप मुक्ति और श्रद्धा का आनंद मिलता है।"[6]
कवयित्री–कमल सूनृत वाजपेयी जी ने दीपावली त्योहार को बहुत सुखद व शांतिप्रिय त्योहार बताया है। इस त्योहार के आगमन पर परिवार में शांति मिलती है। यह त्योहार एकता का प्रतीक है। सब एक दूसरे से स्नेह करते है और गले मिलते हैं। इसी परम्परा को आगे बढ़ाना है –

"अपने परिवार की सुख शांति की विनय करते हैं।
धन्य धान से हो समृद्ध यही कामना करते हैं।
परम पिता ने खुशियों से झोली भर डाली है।
स्नेह दीप बनके सब से मिलना सीखा है।
यही परम्परा है अपनी सब को साथ लेकर चलता है।[7]

गणपति याने समूह का नेता, जूथ का पति जो समूह का सर्वस्व है, विघ्नहर्ता और रिद्धि, सिद्धि दाता है। भाद्र–शुक्ल चतुर्थी को यह उत्सव मनाया जाता है। इस अवसर पर गणपति की मूर्ति–पूजा होती है और फिर विधि पूर्वक पूजा के बाद उसका विसर्जन किया जाता है। महाराष्ट्र में गणेशोत्सव बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। कवयित्री कमलसूनृत वाजपेयी जी ने अपने परिवार के नामों से गणेश जी की स्तुति गाइ –

जय गणेश महाराज की
घणी–घणी कृपा करी गणेश महाराज जी
योत हरष स दे रहया थारी पैरी पोना जी[8]

राखी का त्योहार भाई–बहन के पवित्र रिश्ते का त्योहार है। यह बहुत गहरा धागा है। क्योंकि यह प्यार का गहना है। एक भाई इस धागे को बंधवाकर अपनी बहन की रक्षा करता है। कवयित्री ने बताया है कि –

ये है सब रेशम के धागे
जो हम सब ने बांधे हैं
बहन कहे भैय्या ये राखी है
हो हम सब को बंधन में बांधे हैं।
भैया की जब याद हो।।
इसमें उपहार क्या देना हैं
ये तो प्यार का गहना है
जो हम भई बहनों को
एक प्यार में बांधे है।
ये तो रेशम के धागे है।।"[9]

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि कमल सृनूत वाजपेयी की कविताओं में, बसंत ऋतु, दीपावली, राखी, गणेश चतुर्थी आदि पर्वों का महत्त्व बताया गया। जोकि आज के इस आपाधापी के युग में युवा वर्ग को समझाने का सफल कार्य कवयित्री ने किया है।

संदर्भ

1. कमल सूनृत वाजपेयी, पल–पल याद आती है, पृ॰ 10
2. कमल सूनृत वाजपेयी, पल–पल याद आती है, पृ॰ 40
3. वही
4. कमल सूनृत वाजपेयी, पल–पल याद आती है, पृ॰ 41
5. वही, पल–पल याद आती है, पृ॰ 32
6. प्रोफेसर मोहिनी टाया, पर्वों का महत्त्व, पृ॰ 131
7. कमल सूनृत वाजपेयी, पल–पल याद आती है, पृ॰ 32
8. कमल सूनृत वाजपेयी, पल–पल याद आती है, पृ॰ 51
9. कमल सूनृत वाजपेयी, पल–पल याद आती है, पृ॰ 35